UG V

CONCEPT OF VASHUDHAIVA KUTUMBAKAM : MAN, FAMILY, SOCIETY, AND WORLD.

Contents: • Concept of Vashudhaiva Kutumbakam : MAN, FAMILY, SOCIETY, AND WORLD.

Introduction : साहित्यिक रूप से संस्कृत एक समृद्ध भाषा है। इसी भाषा से एक महान विचार की उत्पत्ति हुई है - वसुधैव कुटुम्बकम् या वसुधैव कुटुम्बकम। वसुधा का अर्थ होता है पृथ्वी अर्थात पूरा विश्व और कुटुम्ब का मतलब होता है परिवार। वसुधैव शब्द की रचना (वसुधा + एव) = वसुधैव अर्थात पूरा पृथ्वी या पूरा विश्व ही एक परिवार है। इस प्रकार वसुधैव कुटुम्बकम का सीधा अर्थ है कि पुरा विश्व/पृथ्वी ही एक परिवार है। और इसमें रहने वाले सभी लोग उस परिवार का हिस्सा है - फिर चाहे वो मनुष्य हो, पशु-पक्षी हो, या पेड़-पौधे हो, इत्यादि।

यद्यपि यह एक प्राचीन अवधारणा है, किन्तु आज यह पहले से भी अधीक प्रासंगिक है। हम सभी जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज की सबसे प्रथम कड़ी होता है- परिवार। "परिवार ऐसे लोगों के एक समूह का नाम है, जो विभिन्न रिश्ते-नाते के कारण भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। ऐसा नहीं है कि उनमें कभी वैचारिक मतभेद या लड़ाई-झगड़े नहीं होता, परन्तु इन सबके बावजूद वे एक दूसरे से या एक-दूसरे के सुख-दुःख में साथ नहीं देते। इसी को परिवार कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी व्याख्या कर सकते हैं, कि जहाँ अपोपन का अहसास हो वही सबसे बढ़िया परिवार है। इसी अपनेपन की प्रबल भावना होने के कारण परिवार सभी लोगों की पहली प्राथमिकता होता है। एक परिवार के सदस्य, एक-दूसरे को पीछे धकेलकर नहीं, अपितु एक-दूसरे का सहारा बनते हुए आगे बढ़ते हैं। परिवार के इसी रूप को जब वैश्विक स्तर पर निर्मित किया जाए तो वह - वसुधैव कुटुम्बकम् कहलाता है।

मनुष्य जाति इस धरती पर उच्चतम विकास करने वाली जाति है। बौद्धिक रूप से वो किसी भी अन्य जीव-प्राणियों से पृथक है अथवा कहें तो श्रेष्ठ है। अपनी इसी बौद्धिक क्षमता के कारण वह पुरी पृथ्वी का स्वामी है, और पृथ्वी के अधिकान्श भू-भाग पर निवास करता है।

शारीरिक बनावट के आधार पर सभी मनुष्य एक जैसे हैं, उनकी आवश्यकताएं भी लगभग एक जैसी ही हैं, और अलग-अलग स्थानों पर रहने के बावजूद, उनकी भावनाओं में काफी कुछ एक समान है। बावजूद इसके वह बँटा हुआ है, और इसी कारण उसने भू-खण्डो को भी बाँट लिया है।

वास्तव में वसुधैव कुटुम्बकम शब्द की उत्पती/उत्पत्ति महापुराण

Ajanta PRODUCTS Oxford